



SHRI BENI CHANDRA JAMATIA (POSTHUMOUS)

Shri Beni Chandra Jamatia was a renowned writer, poet and composer.

2. Born on 14th March, 1928, Shri Jamatia learned Bengali script from a villager named Karim Baksh, at the age of seven. Due to lack of schools in the remote villages he could not pursue further education yet he taught himself Roman script by reading thrown away books and wrapped newspapers. Born to a farmer's family, his days were taken up by farming and cattle rearing. But every night, without fail, he would read whatever he could lay his hands on.

3. Shri Jamatia began his early writings with patriotic songs. In the late 1980 when the culture, language, and ethics of Jamatia community were on the verge of dying, he dedicated his time in writing devotional poems based on the life of Lord Krishna, Shiva-Shakti, Rama and other deities in kok-borok language. He wrote the legend of Mahabharata and Ramayana for the first time in Kok-Borok language in the form of Baul (Poem) and composed it into songs by using his own hand crafted 'Teen Tara.' Initially the songs were sung with the company of his cousins and friends in houses during 'Sandhya Bati' meaning 'lighting diya in the evening,' later these songs gained popularity in Jamatia community and now it is being sung in every sacred ceremony.

4. In 1992, Shri Jamatia collected some of his poems and published them under the title "Dormo Lam Bay Kok Borok Baul" (The Book on Path of Dharma, Kok-Borok devotional songs). He also presented one of his songs, "Devki Kamwng," meaning 'the weeping of Devki after seeing Krishna for the first time in prison' in Doordarshan, Agartala. He values the importance of literacy and education and promotes the philosophy 'Vidya Dhan Mahaa Dhan.'

5. Shri Chandra Jamatia passed away on 14th December, 2020.





श्री वेनी चन्द्र जमातिया (मरणोपरांत)

श्री वेनी चन्द्र जमातिया एक प्रख्यात लेखक, कवि और संगीतकार थे।

2. श्री जमातिया का जन्म 14 मार्च, 1928 को हुआ था। उन्होंने सात वर्ष की आयु में करीम बख्श नामक एक ग्रामवासी से बंगाली लिपि सीखी। दूर दराज के गाँव में स्कूलों की कमी के कारण वह आगे शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, फिर भी उन्होंने फेंकी हुई पुस्तकों और रद्दी अखबारों से रोमन लिपि सीखी। एक किसान परिवार में जन्मे, श्री जमातिया का जीवन कृषि और पशुपालन में बीता, परंतु प्रतिदिन रात को उनके हाथ जो भी पढ़ने की सामग्री लगती, उसे जरूर पढ़ते थे।

3. श्री जमातिया ने प्रारम्भ में देशभक्ति गीत लिखे। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में जब जमातिया समुदाय की संस्कृति, भाषा और आचार–व्यवहार विलुप्त हो रही थी, तब वह कोक–बोरोक भाषा में भगवान कृष्ण, शिव–शक्ति, राम और अन्य देवी–देवताओं के जीवन पर आधारित भजन लिखने लगे। उन्होंने पहली बार बाउल (कविता) रूप में कोक–बोरोक भाषा में रामायण और महाभारत की गाथा लिखी और स्वनिर्मित 'तीनतारा' का उपयोग करके गीतों की रचना की। प्रारम्भ में उन्होंने 'संध्याबाती' के समय घरों में अपने परिजनों और मित्रों के साथ मिलकर यह गीत गाए। बाद में ये गीत जमातिया समुदाय में लोकप्रिय हो गए और अब ये गीत प्रत्येक शुभ अवसर पर गाए जाते हैं।

4. श्री जमातिया ने वर्ष 1992 में अपने कुछ गीतों का संकलन किया और "दोरमो लाम बे कोक बोरोक बाउल" (धर्म की राह पर पुस्तक, कोक–बोरोक भजन) प्रकाशित किया। उन्होंने अपना एक गीत "देवकी कामवंग", जिसका अर्थ है 'पहली बार कृष्ण को देखने पर कारागार में देवकी का रुदन', दूरदर्शन, अगरतला में प्रस्तुत किया। श्री जमतिया साक्षरता और शिक्षा को बहुत महत्व देते हैं और 'विद्या दान महादान' के विचार को बढ़ावा देते हैं।

5. श्री जमातिया का 14 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया।